सुख व दुःख की अनुभूति

—कु० विमल मोंगा, कानपुर

सुख और दुःख मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। सुख व दुःख पर ही मानव जीवन अवलम्बित है। जिस प्रकार सभी ऋतुयें और दिन रात आदि समय समय पर घटित होते रहते हैं उसी प्रकार सुख और दुख का चक्र भी प्राकृतिक रूप से चलता रहता है। जैसे हम सर्दी, गर्मी आदि का केवल अनुभव करते हैं ठीक उसी प्रकार से सुख और दुख भी केवल अनुभव ही किए जा सकते हैं।

सुख व दुःख क्या है ? वास्तव में सुख व दुःख कोई पदार्थ नहीं है यह केवल मानव मन का भाव मात्र है। दुःख और सुख परिस्थितियों से उत्पन्न होते हैं। जिन परिस्थितियों के उत्पन्न होने से मानव-मन दुःख अनुभव करता है उन परिस्थितियो से दूर हटने का प्रयास मनुष्य करता है। वह इस नश्वर जगत में भी अपने आस पास ऐसी परिस्थितियाँ बनाने का प्रयास करता है जिनसे उसे सुख का ही अनुभव हो। प्रत्येक मनुष्य आज संसार में निरन्तर जो उद्योग कर रहा है उसके पीछे वास्तविक सुख को पाने की तीव्र इच्छा ही दृष्टव्य होती है। मानव सच्चे सुख को पाने के लिये छटपटाता तो है किन्तु भ्रमवश वह इस क्षणभंगुर जगत के धन ऐश्वर्य की प्राप्ति में ही सच्चा सुख मान बैठता है और अन्त में उसे निराशा ही प्राप्त होती है। सांसारिक सुख वैभव की जो इच्छा करता है वह बार-बार दुःख के महागर्त में ही गिरता है।

इस अन्धकारमय विश्व में प्रकाश की किरणें उन महान ज्ञानी जनों के रूप में दिखाई देती हैं जो दुःख सुख के सार को जान चुके हैं। वे यह भी जानते हैं कि इस दुःख में ही अलौकिक सुख अर्थात ईश्वर का दर्शन प्राप्त होता है। परमधाम से अवतरित ब्रह्मात्मायें यही जानती हैं कि हम स्वेच्छा से ही श्रीराज श्यामा जी के चरण कमलों को तज कर इस मायावी दुःखों से पूर्ण जगत में दुःख देखने ही आई हैं। अतः यदि हमें दुख मिलता है तो उसमें दुःखी होने की बात नहीं वरन् यह हमारा परम सौभाग्य है। क्योंकि दुःख आने पर ही आत्मा श्रीराज जी का स्मरण करती है और श्रीराज जी के स्मरण मात्र

Nijanand App

से ही उस अलौकिक सुख की प्राप्ति होती है जो कि क्षणिक धन दौलत से मिल पाना असम्भव है। ब्रह्मात्मा तो बारम्बार यही पुकार करती है—

जिस दुःख मेरा पिऊ मिले,
मैं फेर-फेर मांगूँ सो दुःख।
जिस सुख मेरा पिऊ बिछड़े,
आग डारूँ वा सुख॥

जब कोई रूह दुखी होती है तो उसे यह समझना चाहिए कि उस पर श्रीराज जी की अपार कृपा है क्योंकि दुःख आने पर उसे अपने प्रियतम की याद आती है और याद आने पर विरह भाव उत्पन्न होता है और जब विरहाकुल होकर आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा को पुकारेगी तो आत्मा का अपने प्रियतम में पुनर्मिलन अवश्य होगा तब इस परम मिलन में ही आत्मा को परम सुख की प्राप्ति होती है। श्री जी की वाणी कहती भी है—

दुख से विरहा उपजे,
विरहा से प्रेम इश्क।
प्रेम इश्क जब आइया,
तो नेहचे मिलिए हक॥

इस संसार में अनेकानेक ऐसे सन्त, ज्ञानी व महान व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने सुख दुःख के रहस्य को समझा है और परमात्मा से दुःख की चाहना की है—

सुख के माथे सिल पड़ो,
जो नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुःख की,
जो पल पल नाम रटाय॥

इस जगत की धन सम्पत्ति जिसे हम अपना समझते हैं और यह मानते हैं कि सम्पत्ति ही सुख का साधन है यह वास्तव में है नहीं और सम्पत्ति ऐश्वर्य के न प्राप्त होने को ही दुःख मान लेते हैं वास्तविक अर्थों में यह कुछ भी नहीं है सिवाय स्वप्न मात्र के। सच्चा सुख तो परंब्रह्म के स्मरण भजन आदि में ही है जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ट है—

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः।
विपद्विस्मरणं विष्णो सम्पन्नारायणस्मृति॥

अर्थात् "जगत की सम्पत्ति, सम्पत्ति नहीं, ईश्वर की विस्मृति ही विपत्ति (दुःख) है और स्मरण ही सम्पत्ति (सुख) है।"

सांसारिक धन सम्पत्ति को सुख मान लेना मानव की बहुत बड़ी भूल है। क्योंकि यह संसार क्षणभंगुर है इस संसार में धर्म के अतिरिक्त कोई वस्तु अपनी न समझनी चाहिए। विश्व के सभी बड़े-बड़े ग्रन्थों चाहे वह ईसाइयों की बाइबिल हो या मुसलमानों को कुरान-शरीफ, हिन्दुओं की गीता हो या सिक्खों के गुरुग्रन्थ साहब—में दुःख के महत्व को अत्यन्त सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। श्रीमद्भागवत में कुन्ती ने भी भगवान श्रीकृष्ण से दुःख को वरदान के रूप में मांगा था—

Nijanand App

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्यादपुनर्भव दर्शनम् ॥

अर्थात् 'हे कृष्ण ! हमारे जीवन पथ में सदा पग-पग पर विपत्तियाँ आती रहें, क्योंकि विपत्तियों में निश्चित रूप से आपके दर्शन हुआ करते हैं और आपके दर्शन मात्र से ही 'अपुनर्भव' अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।'

महाराज शिवि ने भी अपने जीवन काल में दुःख की ही कामना की थी—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं ना पुनर्भवम्।
कामये दुख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशम् ॥

'इस विशाल ब्रह्माण्ड में जितने भी आर्त्त हैं, दुखी हैं उन सबको सुख की प्राप्ति हो, मेरा भले ही स्वर्ग जाय, मोक्ष जाय, मैं यही कामना करता हूँ।' किन्तु वास्तव में ऐसी कामना करने वाले का मोक्ष जायेगा नहीं क्योंकि वे तो महानात्मा हैं जो दूसरों के दुख को मिटा कर स्वयं दुख वरण करना चाहते हैं। जितने भी व्यक्ति इस संसार में 'दुःख की चाह' करते हैं उनकी इस 'चाह' के पीछे मुख्य भावना मोक्ष की निहित रहती है। क्योंकि दुःख आने पर ही निजानन्द की प्राप्ति सम्भव है।

इस प्रकार से दुःख सुख के रहस्य को समझ लेने पर यह सांसारिक वैभव छल कपट युक्त प्रतीत होने लगता है। अन्ततोगत्वा हम यह कहने में समर्थ हैं कि यदि हमें अपने प्राणप्रिय प्रियतम श्रीकृष्ण की प्राप्ति करना चाहते हैं तो हमें इस नश्वर जगत में प्राप्त होने वाले दुःखों से घबराना नहीं चाहिये अपितु श्रीराज जी के चरण कमलों का ध्यान करना चाहिए और साथ ही दूसरी बात दुख से न घबराने की यह भी है कि—

दुख से पिउ जी मिलसी,
सुखै न मिलिया कोय।
अपने धनी का मिलना,
तो दुखै से होय ॥

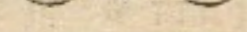

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

परमात्मा से ही है इसलिए स्वामी जी ने सबके धर्मचियों और कुम्भ में आए सब साथियों के सब संशय निवारण किए। इसके बाद सबने एक पूर्ण ब्रह्म की पहचान करके विजयाभिनन्दन बुद्ध निष्कलंक का ही ध्वज हरिद्वार में लहराया। इसलिए हम किसी देवी देवता का सहारा न लेकर सिर्फ वाणी-राजजी महाराज का सहारा व पूर्ण विश्वास लेकर ही जीवन व्यतीत करें।

Nijanand App